अंक योजना

अभ्यास प्रश्न पत्र 5 (2020-2021)

इतिहास (027)

कक्षा-XII

	खंड क	
1.	c) शोर्तुघई Theme 1 Page 3	1
2.	चाणक्य / कौटिल्य Theme 2 Page 32	1
3.	'चाडालों को गाँव के बाहर रहना पड़ता था और परित्याग किए गए बर्तनों का उपयोग करना पड़ता था'। Theme 3 Page 66	1
4.	c) महिलाओं से शादी के बाद अपने पिता के गोत्र को त्याग देने की अपेक्षा थी। Theme 3 page 58	1
5.	एक सातवाहन राजा तथा उसकी पत्नी **दृष्टि-बाधित बाधित छात्रों के लिए प्रश्न संख्या 5 के स्थान पर** b) सातवाहनों में Theme 3 page 59	1
6.	c) महावीर Theme 4 page 88	1
7.	a) अलवार Theme 6 page 144	1
8.	दादू Theme 6 page 160	1
9.	गोपुरम : राजकीय प्रवेशद्वार मंडप : मंदिरों में विभिन्न आयोजनों में प्रयुक्त होने वाला स्थल (कोई अन्य मान्य अंतर) Theme 7 page 185-186	1
10.	c) कथन(A) और कारण (R) दोनों सही है पर कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण नहीं है। Theme 7 page 178	1

www.edudel.nic.in

11.	फरगाना, मध्य एशिया Theme 9 page 225	1
12.	अबुल फज्ल Theme 9 page 228	1
13.	a) 1813 में Theme 10 page 263	1
14.	d) कथन(A) और कारण (R) दोनों सही है और कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण है। Theme 11 page 301	1
15.	c) जवाहर लाल नेहरू Theme 13 page 367	1
16.	गांधीजी ने 1920 में असहयोग आंदोलन प्रारंभ किया । **अथवा** गांधीजी ने 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ किया । Theme 13 page 350,357	1
	खंड ख	
17.	1) b) मध्य प्रदेश 2) b) फ़्रांसीसियों तथा अंग्रेजों को भोपाल की बेगमों द्वारा प्लास्टर प्रतिकृतियां दे दी गई। 3) d) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही है और कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण है। 4) a) शाहजहाँ बेगम Theme 4 page 82-83	1+1+1=3
18.	1) c) भगवान श्री कृष्ण, सुभद्रा तथा बलराम को 2) a) रॉबर्ट रेडफ़ील्ड द्वारा 3) a) उड़ीसा में 4) c) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही है पर कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण नहीं है। Theme 6 page 141 **<u>केवल दृष्टिबधितों के लिए : प्रश्न संख्या 18 के स्थान पर</u>** **1)** a) भगवान विष्णु के 2) c) अप्पार, सुंदरार और संबंदर की 3) d) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही है और कारण (R) कथन	1+1+1=3

www.edudel.nic.in

	(A) का स्पष्टीकरण है। 4) c) करइक्काल अम्मइयार Theme 6 page 144	
19.	1) c) 13 दिसम्बर 1946 को 2) c) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही है पर कारण (R) कथन (A) का स्पष्टीकरण नहीं है। 3) d) बी पोकर बहादुर 4) d) गोविंद वल्लभ पंत का Theme 15 page 416-419	1+1+1=3
	खंड ग	
20.	1. अधिकांश महाजनपदों पर राजा का शासन 2. गण और संघ के नाम से प्रसिद्ध राज्यों पर कई लोगों के समूह का शासन । 3. प्रत्येक महाजनपद की एक राजधानी होती थी जिसे प्रायः किले से घेरा जाता था। 4. कुछ राज्यों की अपनी सेना और नौकरशाही तंत्र 5. कुछ राज्य सहायक सेना पर निर्भर 6. कोई अन्य मान्य बिन्दु Theme 2 Page 29-30	3
21.	1. विजयनगर राज्य सदा सामरिक रूप से तैयार रहता था 2. पड़ोसी राज्यों के साथ कृष्ण तुंगभद्रा दोआब के उपजाऊ क्षेत्र व अन्य संसाधनों को लेकर संघर्ष 3. कृष्णदेव राय द्वारा 1512 में रायचूर दोआब पर कब्ज़ा,1514 में उड़ीसा के शासकों और 1520 में बीजापुर दे सुल्तान को पराजित करना। 4. 1565 में रामराय के नेतृत्व में तालीकोटा का युद्ध, युद्ध में बीजापुर, अहमदाबाद तथा गोलकुंडा की संयुक्त सेनाओं द्वारा विजयनगर की करारी हार 5. सुल्तानों और रायों में धार्मिक भिन्नताओं के बावजूद संबंध अपरिहार्य रूप से शत्रुतापूर्ण नहीं 6. विजयनगर शासक और सल्तनतें दोनों ही एक दूसरे के स्थायित्व को सुनिश्चित करने के इच्छुक 7. कोई अन्य मान्य बिन्दु 8. (कोई तीन बिन्दु) **Theme 7 Page 173-174**	3

www.eduel.nic.in

22.	1. 1770 के दशक में ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा पहाड़ियों को निर्मूल कर देने की क्रूर नीति। 2. पहाड़ियों का शिकार और संहार 3. 1780 के दशक में भागलपुर के कलेक्टर ऑगस्टस क्लीवलैंड द्वारा शांति स्थापना का प्रस्ताव। 4. शांति स्थापना की नीति के तहत पहाड़िया मुखियाओं को वार्षिक भत्ता दिया जाना और बदले में मुखिया द्वारा अपने आदमियों का चाल-चलन ठीक रखने की ज़िम्मेदारी लेना। 5. पहाड़ी मुखियाओं द्वारा वार्षिक भत्ते के बदले बस्तियों में व्यवस्था व अनुशासन बनाए रखना। 6. जिन पहाड़िया मुखियाओं ने भत्ता स्वीकार किया उनमें से अधिकांश अपने समुदाय में अपनी सत्ता खो बैठे। 7. बहुत से पहाड़ियों द्वारा भत्ता लेने से इनकार और पहाड़ों के भीतरी भागों में चले जाना। 8. बाहरी लोगों से अपनी लड़ाई पहाड़ियों ने जारी रखी। 9. कोई अन्य मान्य बिन्दु **Theme 10** **Page 269**	3
23.	1. अवध में भू राजस्व नीति के तहत ताल्लुकदारों की हैसियत,स्वायत्ता व सत्ता को चोट। 2. 1856 में एकमुश्त बंदोबस्त नाम से भू राजस्व व्यवस्था अवध में लागू । 3. बंदोबस्त का आधार - ताल्लुकदार बिचौलिये, उनके पास मालिकाना हक़ नहीं 4. एक मुश्त बंदोबस्त के तहत ताल्लुकदारों की उनकी पुश्तैनी ज़मीनों से बेदखली 5. ताल्लुकदारों की सत्ता छिनने से एक पूरी सामाजिक व्यवस्था का भंग होना। 6. निष्ठा और संरक्षण के जिन बंधनों से किसान ताल्लुकदारों के साथ बंधे थे वह अस्तव्यस्त। 7. अंग्रेज़ो से पहले ताल्लुकदार जनता का उत्पीड़क की छवि के साथ साथ दयालु अभिभावक की छवि भी रखते थे। 8. किसानों को ताल्लुकदारों से मुसीबत के वक्त मिलने वाले कर्जे और मदद की उम्मीद खत्म।	3

www.edudel.nic.in

	9. कोई अन्य मान्य बिन्दु **Theme 11** Page 298-299	
	खंड घ	
24.	1. ब्राह्मणों का कार्य था- वेदों का अध्ययन और अध्यापन, वैदिक शिक्षा का प्रचार। 2. ब्राह्मणों का कार्य - यज्ञ-हवन संपन्न करना और करवाना, दान देना और लेना। 3. क्षत्रियों का कार्य- युद्ध का संचालन करना और राज्य की सुरक्षा में सक्रिय भूमिका निभाना। 4. क्षत्रियों का कार्य - समाज को सुरक्षा प्रदान करना, न्याय प्रदान करना, वेद- अध्ययन, व दान-दक्षिणा देना। 5. वैश्यों का कार्य - कृषि संबंधी कार्यों को बढ़ावा देना, फसलों की पैदावार करना। 6. वैश्यों का कार्य - गौ-पालन करना, व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा देना। 7. शूद्रों का कार्य- तीनों वर्णों की सेवा करना। 8. इन नियमों का पालन करवाने के लिए इसे ब्राह्मणो ने एक दैवीय व्यवस्था बताया। 9. कोई अन्य मान्य बिन्दु Theme 3 Page 61 **अथवा** 1 सातवाहन राजाओं में बहुपत्नी प्रथा प्रचलित थी। 2. वैदिक ऋषियों जैसे गौतम व वशिष्ठ आदि के नाम पर गोत्र पितृ वंशज माने - जाते थे। 3. विवाह के उपरांत भी स्त्रियाँ अपने पिता के गोत्र को अपने नाम के साथ कायम रख सकती थी। 4. दो प्रकार के वैवाहिक परंपराओं का प्रचलन थाअंतर्विवाह व बहिर्विवाह। - 5. अंतर्विवाह संबंध एक ही गोत्र, कुल या एक ही जाति समूह के मध्य होते थे। 6. बहिर्विवाह एक गोत्र विशेष से बाहर यानी दूसरे गौत्र में वैवाहिक संबंध होते थे। 7. एक पुरूष की अनेक पत्नियां होने की सामाजिक परिपाटी प्रचलित थी। 8. अंतर्विवाह पद्धति का प्रचलन मुख्यत: दक्षिण भारतीय समाज में था।	8

www.edudel.nic.in

	9. कोई अन्य मान्य बिन्दु Theme 3 Page 58-60	
25.	**1**. अकबर की सुलह-ए-कुल की नीति का मुख्य उद्देश्य सार्वभौमिक सहिष्णुता था। 2. अकबर का मानना था कि राज्य के विभिन्न धर्मोंहिंदू-, मुस्लिम, जैन, जरतुश्त, पारसी आदि के मध्य शांति और सहअस्तित्व स्थापित करना - बादशाह का फर्ज है। **3.** सुलहकुल-ए- का आदर्श राज्य के सभी समुदायों के बीच शांति स्थापित करने का श्रेष्ठ माध्यम था। **4.** सुलह-ए-कुल के आदर्श में राज्य के प्रत्येक धर्म की अच्छी बातों को शामिल किया गया। **.** शांति और स्थायित्व के स्रोत रूप में बादशाह सभी धार्मिक और नृजातीय समूहों के ऊपर होता था और सुनिश्चित करता था कि न्याय और शांति बनी रहे। **6.** 1563 में तीर्थयात्रा कर व 1564 में जजिया कर समाप्त करके धार्मिक सद्भावना का संदेश दिया गया। **7.** इस नीति के तहत उपासनास्थलों के निर्माण व रखरखाव के लिए अनुदान - दिए गए **8.** साम्राज्य के अधिकारियों को प्रशासन में सुलह - ए - कुल के नियम का अनुपालन करने के निर्देश दिए गए। **9.** अबुल फज़ल ने सुलह - ए - कुल को प्रबुद्ध शासन कि आधारशिला बताया। **10.** कोई अन्य मान्य बिन्दु Theme 7 Page 233-234 **अथवा** 1. मुगलों के राजत्व सिद्धांत को अबुल फज़ल ने सबसे ऊंचे स्थान पर रखा। 2. रानी अलानकुआ की कहानी से यह समझाने का प्रयास किया गया कि गर्भ में पल रही संतानों पर दैवीय प्रकाश का प्रभाव स्पष्ट है।	8

www.edudel.nic.in

	3. दैवीय प्रकाश पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होता है। 4. मुगल राजत्व के अंतर्गत संतानें फर- ए-इजादी अर्थात ईश्वरीय प्रकाश धारण करती हैं। 5. फर-ए-इजादी का सिद्धांत सर्वप्रथम सूफी संत शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी ने प्रस्तुत किया। 6. दैवीय राजत्व के अंतर्गत मुगल बादशाह पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि है। 7. इतिवृत्तों के विवरणों के साथ चित्रों ने इन विचारों को इस प्रकार किया कि देखने वाले के मन-मस्तिष्क पर स्थायी प्रभाव पड़े। 8. 17वीं शताब्दी में बादशाओं को प्रभा मंडलों के संग चित्रित किया जाने लगा। 9. कोई अन्य मान्य बिन्दु Theme 9 Page 232-233	
26.	1. 1946-47 की सर्दियों में जब संविधान सभा में चर्चा चल रही थी, तो अंग्रेज भारत में थे। 2. जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में अंतरिम सरकार होने के बावजूद , उन्हें सारा कार्य वायसराय और लंदन में ब्रिटिश सरकार की देखरेख में करना पड़ता था। 3. लाहिड़ी के अनुसार संविधान सभा अंग्रेजों की बनाई हुई है। वह अंग्रेजों की योजनाओं को साकार करने का काम कर रही है। 4. मामूली से मामूली मतभेद के लिए भी संघीय न्यायालय तक दौड़ना होगा या इंग्लैड में जाकर ब्रिटिश प्रधानमंत्री या किसी और के दरवाज़े पर दस्तक देनी होगी। 5. संविधान सभा ब्रिटिश बंदूकों, ब्रिटिश सेना, उनके आर्थिक व वित्तीय शिकंजे के साये में। 6. नेहरू के अनुसार संविधान सभा की शक्ति का स्रोत जनता की इच्छा थी और भारतीय लोगों की आकांक्षाओं और भावनाओं की अभिव्यक्ति का साधन थी। 7. संविधान सभा लोकतन्त्र, समानता और न्याय जैसे आदर्शों से गहरे तौर पर जुड़ी हुई थी। 8. 13 दिसंबर 1946 को नेहरू जिस कल्पना की बात कर रहे थे वह एक स्वतंत्र संप्रभु भारतीय गणराज्य के संविधान की कल्पना थी। 9. कोई अन्य मान्य बिन्दु (समग्रता में मूल्यांकन)	8

www.edudel.nic.in

	Theme 15 Page 413-416 **अथवा** संविधान के अंतर्गत शक्तियों के विभाजन की तीन सूचियां हैं- केंद्रीय सूची, राज्य सूची और समवर्ती सूची। 1. केंद्रीय सूची के विषय केंद्रीय सरकार के अधीन हैं, इन विषयों का संबंध राष्ट्रीय महत्व से है। 2. राज्य सूची के विषय राज्य से संबंधित हैं। 3. समवर्ती सूची के विषय केंद्र व राज्य दोनों की साझा जिम्मेदारी हैं परंतु अन्य संघों की तुलना में बहुत ज्यादा विषयों को केवल केंद्रीय नियंत्रण में रखा गया है। 4. समवर्ती सूची में भी प्रान्तों की इच्छाओं की उपेक्षा करते हुए बहुत ज्यादा विषय रखे गए है। 5. खनिज पदार्थों तथा प्रमुख उद्योगों पर भी केंद्र सरकार का ही नियंत्रण दिया गया है। 6. अनुच्छेद 356 के तहत गवर्नर की सिफ़ारिश पर केंद्र सरकार को राज्य सरकार के सारे अधिकार अपने हाथ में लेने का अधिकार है। 7. सीमा शुल्क और कंपनी कर आदि की सारी आय केंद्रीय सरकार को दी गई है। 8. आयकर और आबकारी शुल्क से होने वाली आय केंद्र व राज्य दोनों में बाँट दी जाती है। 9. अन्य मामलों से होने वाली आय जैसे जमीन व संपत्ति कर, बिक्री कर वसूल करने का अधिकार राज्यों को दिया गया है और राज्य अपने स्तर पर भी कुछ अधिभार और कर वसूल कर सकती है। 10. कोई अन्य मान्य बिन्दु (समग्रता में मूल्यांकन) Theme 15 Page 423	
	खंड ड	
27.	27.1) इस गली में दो इंच की गहराई पर एक खोपड़ी का भाग, एक वयस्क की छाती तथा हाथ के ऊपरी भाग की हड्डियाँ मिली थी। 27.2) 1924 में भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के डायरेक्टर जनरल थे । अस्थियाँ इंगित करती हैं कि यह अत्यंत लापरवाही तथा श्रद्धाहीन तरीके से बनाये गए शवाधान थे; आर्यों द्वारा आक्रमण के कारण जनसंहार	1+2+2=5

www.edudel.nic.in

	(कोई अन्य मान्य बिन्दु) 27.3) अन्य साक्ष्यों के संदर्भ में अध्ययन किए जाने पर प्रारंभिक व्याख्याएँ कभी - कभी पलट दी जाती हैं उदाहरण के लिए जी. एफ. डेल्स के अनुसार डैडमैन लेन में पाई गई अधिकांश अस्थियाँ अत्यंत लापरवाही तथा श्रद्धाहीन तरीके से बनाये गए शवाधान थे। (कोई अन्य मान्य बिन्दु) **Theme 1** **Page 18**	
28.	28.1) लोग गांधीजी को ईश्वर के अवतार के रूप में देखते थे जो उनके दुखों को हरने के लिए आया है। 28.2) किसान महात्मा गाँधी को एक उद्धारक के रूप में देखते थे जो उन्हे उनके हक दिलवाएँगे । 28.3) आजमगढ़ के एक किसान ने कहा कि वह महात्मा जी की प्रमाणिकता में तब विश्वास करेगा जब उसके खेत में लगाए गए गेहूँ तिल में बदल जाएँ। अगले दिन उस खेत का सारा गेहूँ तिल बन गया। (कोई अन्य मान्य उदाहरण भी) **Theme 13** **Page 353-354**	1+2+2=5
29.	29.1 दक्खनी में लिखी सूफी छोटी कविता 29.2 लोरीनमा और शादीनामा 29.3 यह रचनाएँ संभवतः औरतों द्वारा चक्की पीसने और चरखा कातते हुए गई जाती थीं **Theme 6** **Page 157**	1+2+2=5
	खंड च	
30.	30.1	1+1+1=3

www.edudel.nic.in

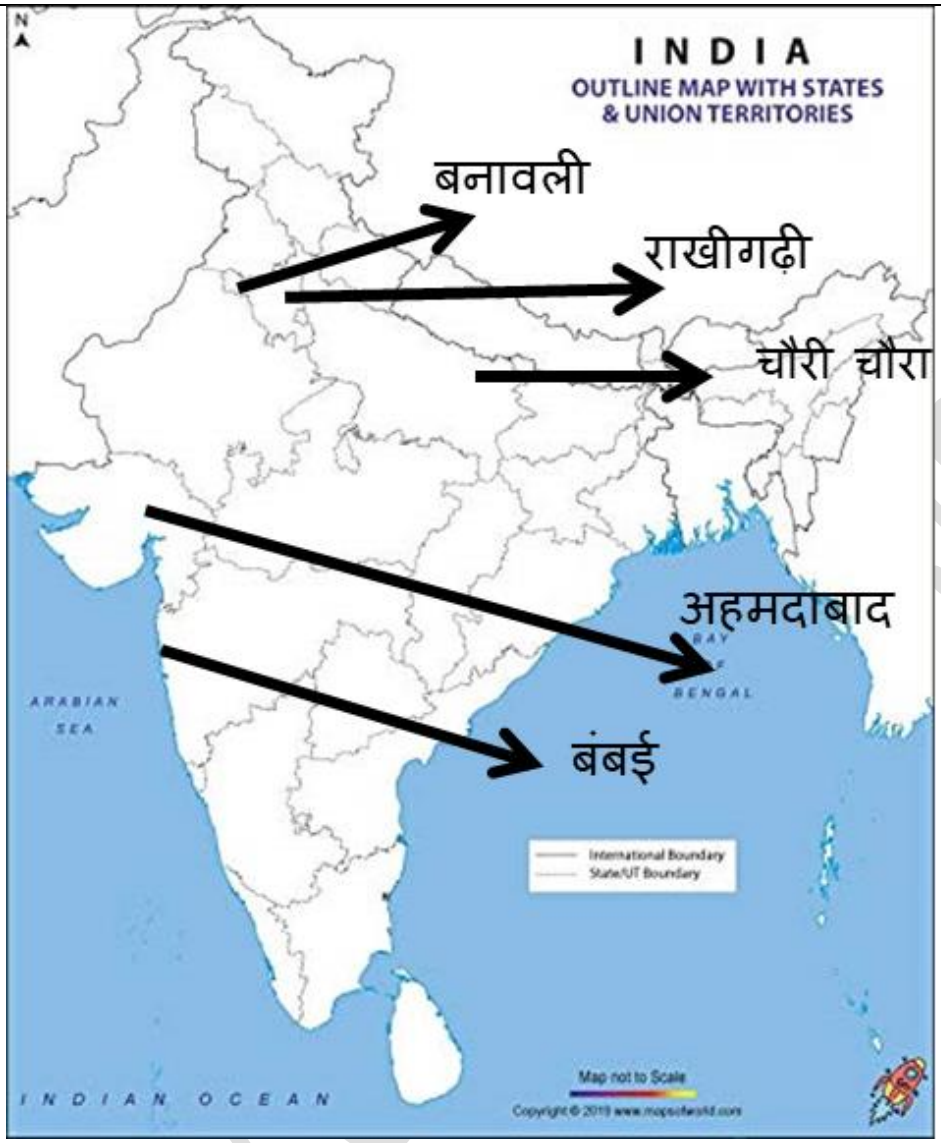

30.2) **A)** पानीपत

B) आगरा

1+1=2

केवल दृष्टिबाधितों के लिए:

30. 1. अहमदाबाद, बंबई, कलकत्ता (अन्य प्रासंगिक स्थल भी मान्य)

अथवा

a) कालीबंगन

b) बनावली

30. 2. आगरा ,लाहौर, फ़तेहपुर सीकरी ,शाहजहानाबाद (दिल्ली)

(कोई दो)